हिंदी साहित्येतिहास लेखन : सामान्य परिचय

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

(1) साहित्य का अर्थ:-

हमारे लिए सबसे पहले यह जानना अनिवार्य है कि साहित्य से क्या तात्पर्य है, किस रचना को साहित्य कहा जाए यह तय करने के लिए प्राय: दो तत्त्वों पर बल दिया जाता है। एक तो रचना में 'स-हित' यानी सभी के हित का भाव होना चाहिए तथा दूसरे उसकी अभिव्यक्ति में सौंदय, कलात्मकता तथा रमणीयता होनी चाहिए।

यदि केवल 'स-हित' के भाव को आधार मानें तो विज्ञान की पुस्तकों को भी साहित्य मानना पड़ेगा तथा यदि केवल 'रमणीयता' को आधार बनाएँ तो कई सतही तथा हल्का मनोरंजन करनेवाली कृतियाँ को भी साहित्य की श्रेणी में रखना पड़ेगा।

यही कारण है कि साहित्य से तात्पर्य केवल उन रचनाओं से होता है जिनमें ये दोनों गुण विद्यमान हैं। इन गुणों का स्तर, अनुपात तथा महत्व समय तथा रचनाकार के परिप्रक्ष्य में बदल सकता है तथा बदलता भी है। यही कारण है कि साहित्य की कोई निश्चित या वस्तुपरक परिभषा नहीं हो सकती, केवल उसके लक्षणों की पहचान ही हम कर सकते हैं।

"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्। - आचार्य भामह - काव्यालंकार।

(2) इतिहास का अर्थ :-

'इतिहास' का शाब्दिक अर्थ है- ऐसा ही हुआ। इसमें अतीत के तथ्यों व घटनाओं का कालक्रमानुसार समावेश किया जाता है। इतिहास की प्रासंगिकता उसकी निरन्तरता में है क्योंकि यह अतीत की जानकारी देते हुए भविष्य पर प्रकाश डालता है।

इतिहास तथ्य और दृष्टिकोण, अनुसंधान और व्याख्या के अन्योन्याश्रय का नाम है। दूसरे शब्दों में, यह अतीत का वर्तमान से संवाद है। इसकी चिंता का केंद्र केवल अतीत ही नहीं, वर्तमान भी है।

3) **साहित्येतिहास** :

'साहित्येतिहास' शब्द का अर्थ होता है साहित्य की विकासमान परंपरा, उसके जन्म से लेकर अद्यतन स्थिति तक का क्रमबद्ध अध्यायन। साहित्य के इतिहास में हम मानव - भावना के विकास़ की कहानी पाते हैं और उन भावनाओं को व्यक्त करतेवाली भाषिक पद्धति के विन्यास से भी परिचित होते हैं। साहित्य का इतिहास न तो कोरा कविवृत्त संग्रह है और न मात्र सभ्यता के विकास क्रम का आलेख। इसका उद्देश्य स्रष्टा और परिवेश के आंतरिक संबंधों का उद्घाटन है। यह भवात्मक उत्कर्ष के साथ अभिव्यक्ति सौष्ठव कभी क्रमिक-विकास का आख्यान है।

साहित्येतहास एक संश्लिष्ट विधा है, जिसके लिए लेखक में ऐतिहासिक बोध, सामाजिक चेतना, अनुसंधान की समता, कल्पनाशीलता, भाषाशास्त्र और समीक्षा पद्धति सबकी जानकारी होना आवश्यक है।

4) **साहित्येतिहास की आवश्यकता क्यों** :-

साहित्यकार की रचना पर तत्कालीन परिस्थितियों और उसके अपने व्यक्तित्व का मिला-जुला प्रभाव पड़ता है। अत: साहित्य को पूरी तरह से समझने के लिए युगीन परिस्थितियों, समकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों व साहित्यकारों की परंपराओं को समझना आवश्यक है।

5) **साहित्येतिहास लेखन की समस्याएँ**:-

1. इतिहास लेखन के लिए सबसे पहली आवश्यकता सामाग्री-संकलन की है। अपूर्ण अथवा त्रुटिपूर्ण सामाग्री के आधार पर निर्दोष इतिहास का लेखन संभव नहीं।

2. इतिहास-लेखन के लिए आवश्यक सामाग्रियॉ हैं प्रमुख और गौण। साहित्यकारों की कृतियों के सुसंपादित संस्करण, कालक्रमानुसार आकर, ग्रंथसूची, पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें, लोक-साहित्य की विवरणी तथा राजनीतिक-सामाजिक इतिहास आदि।
3. परंपरा के वैज्ञानिक अनुशीलन के लिए काल-विभाजन की अनिवार्यता है। पर काल-विभाजन यथासाध्य साहित्यिक आधर पर किया जाना चाहिए; हालंकि यह साहित्यिक आधार परिवेशगत परिस्थितियों से पूर्णतया असंपृक्त नहीं हो सकता।
4. काल-विभाजन के समय भावधारा के परिवर्तन के साथ शैली शिल्प के विन्यास पर भी ध्यान देना आवश्यक है।
5. साहित्येतिहास और आलोचाना गहन संश्लिष्ट विधाएं हैं। साहित्येतिहास-लेखन की सफलता सामाग्री की समृद्धि के साथ मूल्यांकन की नवीनता पर भी निर्भर है।
6. यह मूल्ययंकन का प्रतिमान इतिहासकार को अपने युग से प्राप्त होता है। अतएव उसके लिए केवल अतीत का विषद ज्ञान ही नहीं; वर्तमान का जीवंत बोध भी उतना ही जरूरी है।

(समाप्त)